• बाल कविता...

आए बादल

बहुत दूर से आए बादल।
सागर से पानी लेकर
आसमान में छाए बादल।
भूरे - भूरे, काले - काले
सबके मन को भाए बादल।
श्वेत - सुरमई रंगों में
जैसे खूब नहाए बादल।
पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण
दिशा - दिशा लहराए बादल।
घनी - अन्धेरी रातों में
बादल राग सुनाएं बादल।
झूम -झूमके गरज रहे हैं
हाथी-सा मदमाए बादल।
पीहा - पीहा करे पपीहा
सबकी प्यास बुझाएं बादल।
धरती कब से देख रही है
नभ में आस लगाए बादल।
बड़े दिनों में आए बादल ।

■ राजा खुगशाल

चांद सलोना

चांद सलोना, चांद सलोना,
नटखट-सा नन्हा मृगछौना।
दौड़ रहा मन की मस्ती में,
अंबर की उजली बस्ती में।
कभी बादलों में छिप जाता,
कभी उछलकर बाहर आता।
एक रात में ही यह चलकर-

■ प्रकाश मनु

• चुटकुले...

आलसी बेटा– पापा एक गिलास पानी देना।
बेटा– प्लीज, दे दो ना...
पापा– अब अगर पानी मांगा तो थप्पड़ मारूंगा।
बेटा– थप्पड़ मारने आओ तो पानी लेते आना।
बेटे के बात सुनकर पिताजी रह गए दंग।

पुलिसवाला चौराहे पर चेकिंग कर रहा था...
पुलिसवाला (पप्पू से)– इस बैग में क्या है?
पप्पू– बताते हैं...
पुलिसवाले ने फिर से पूछा– अरे क्या है इसमें?
पप्पू– बताते हैं... बताते हैं...
पुलिसवाले ने तुरंत मौके पर बम निरोधक दस्ते को बुला लिया..
उन्होंने जैसे ही बैग को खोला...
हवलदार बोला–
साहब इसमें तो बतासे हैं..
पुलिसवाला (पप्पू से)– इसमें बतासे हैं तो इतनी देर से तू बोल क्यों नहीं रहा था?
पप्पू– इत्ती देल से यही तो बता लहा था ती इतमें बताते हैं बताते हैं...
ये सुनकर पुलिसवाला बेहोश...

• जानकारी...

दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा जंगल

दुनिया में एक से एक बड़े-बड़े जंगल हैं, जहां हजारों पेड़-पौधे और जीव-जंतु रहते हैं। वैसे तो दुनिया का सबसे बड़ा जंगल अमेजन का वर्षावन है, जो अरबों एकड़ में फैला हुआ है। यह जंगल इतना विशाल है कि यह अकेले ही नौ देशों की सीमाओं को छूता है। कुछ ऐसा ही है कांगो का वर्षावन, जिसे दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा जंगल कहा जाता है। यह मध्य अफ्रीका में स्थित है और इसका ज्यादातर हिस्सा कांगो देश में फैला हुआ है। 23 लाख वर्ग किलोमीटर से भी अधिक क्षेत्र में फैला यह जंगल भी इतना बड़ा है कि यह छह देशों में फैला हुआ है।

कांगो के जंगल को 'वर्षावन' इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यहां अधिकतर समय बारिश ही होती रहती है और खूब होती है। कहते हैं कि इस जंगल के कई हिस्से ऐसे भी हैं, जहां इंसान भी आज तक नहीं पहुंच पाए हैं। यहां तक कि जंगल में रहने वाले लोग भी पूरा जंगल नहीं घूम पाए होंगे।

यह जंगल इतना घना है कि कई जगहों पर तो सूर्य की रोशनी भी जमीन तक नहीं पहुंच पाती है। आपको जानकर हैरानी होगी कि इस जंगल में एक-दो नहीं बल्कि कुल पांच नेशनल पार्क हैं, जिन्हें संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व धरोहर का दर्जा प्राप्त है।

जैसे अमेजन के जंगलों के बीच अमेजन नदी निकलती है, ठीक वैसे ही इस जंगल के बीच से कांगो नदी निकलती है, जिसकी लंबाई करीब 4700 किलोमीटर है। यह अफ्रीका की दूसरी सबसे लंबी नदी जबकि दुनिया की सबसे गहरी नदी है। यह अंगोला, बुरुण्डी, कैमरून, तंजानिया और जाम्बिया जैसे कई देशों से होकर गुजरती है।

इस जंगल में 11 हजार से भी अधिक प्रकार के पेड़-पौधे मौजूद हैं। इनमें से एक हजार तो ऐसे हैं जो सिर्फ इसी जंगल में उगते हैं। इसके अलावा यह जंगल 2000 से भी अधिक तरह के जीवों और एक हजार से भी अधिक तरह की चिड़ियों का घर है। यहां ऐसे-ऐसे खतरनाक जीव-जंतु रहते हैं कि अगर कोई इंसान गलती से भी घने जंगलों में पहुंच जाए तो फिर उसका लौट कर वापस आना लगभग नामुमकिन है।

• उत्तर प्रदेश की लोक-कथा

शेखचिल्ली और कुएं की परियां

एक गांव में एक सुस्त और कामचोर आदमी रहता था। काम - धाम तो वह कोई करता न था, हां बातें बनाने में बड़ा माहिर था। इसलिए लोग उसे शेखचिल्ली कहकर पुकारते थे। शेखचिल्ली के घर की हालत इतनी खराब थी कि महीने में बीस दिन चूल्हा नहीं जल पाता था। शेखचिल्ली की बेवकूफी और सुस्ती की सजा उसकी बीवी को भी भुगतनी पड़ती और भूखे रहना पड़ता। एक दिन शेखचिल्ली की बीवी को बड़ा गुस्सा आया। वह बहुत बिगड़ी और कहा, 'अब मैं तुम्हारी कोई भी बात नहीं सुनना चाहती। चाहे जो कुछ करो, लेकिन मुझे तो पैसा चाहिए। जब तक तुम कोई कमाई करके नहीं लाओगे, मैं घर में नहीं, घुसने दूंगी।' यह कहकर बीवी ने शेखचिल्ली को नौकरी की खोज में जाने को मजबूर कर दिया। साथ में, रास्ते के लिए चार रूखी - सूखी रोटियां भी बांध दीं। साग - सालन कोई था ही नहीं, देती कहाँ से? इस प्रकार शेखचिल्ली को न चाहते हुए भी नौकरी की खोज में निकलना पड़ा।

शेखचिल्ली सबसे पहले अपने गांव के साहूकार के यहाँ गए। सोचा कि शायद साहूकार कोई छोटी - मोटी नौकरी दे दे। लेकिन निराश होना पड़ा। साहूकार के कारिन्दों ने ड्योढ़ी पर से ही डांट - डपटकर भगा दिया। अब शेखचिल्ली के सामने कोई रास्ता नहीं था। फिर भी एक गांव से दूसरे गांव तक दिन भर भटकते रहे। घर लौट नहीं सकते थे, क्योंकि बीवी ने सख्त हिदायत दे रखी थी कि जब तक नौकरी न मिल जाए, घर में पैर न रखना। दिन भर चलते - चलते जब शेखचिल्ली थककर चूर हो गए तो सोचा कि कुछ देर सुस्ता लिया जाए। भूख भी जोरों की लगी थी, इसलिए खाना खाने की बात भी उनके मन में थी। तभी कुछ दूर पर एक कुआं दिखाई दिया। शेखचिल्ली को हिम्मत बंधी और उसी की ओर बढ़ चले। कुएं के चबूतरे पर बैठकर शेखचिल्ली ने बीवी की दी हुई रोटियों की पोटली खोली। उसमें चार रूखी - सूखी रोटियां थीं। भूख तो इतनी जोर की लगी थी कि उन चारों से भी पूरी तरह न बुझ पाती। लेकिन समस्या यह भी थी कि अगर चारों रोटियों आज ही खा डालीं तो कल - परसों या उससे अगले दिन क्या करूंगा, क्योंकि नौकरी खोजे बिना घर घुसना नामुमकिन था। इसी सोच-विचार में शेखचिल्ली बार - बार रोटियां गिनते और बारबार रख देते। समझ में नहीं आता कि क्या किया जाए। जब शेखचिल्ली से अपने आप कोई फैसला न हो पाया तो कुएं के देव की मदद लेनी चाही। वह हाथ जोड़कर खड़े हो गए और बोले, 'हे बाबा, अब तुम्हीं हमें आगे रास्ता दिखाओ। दिन भर कुछ भी नहीं खाया है। भूख तो इतनी लगी है कि चारों को खा जाने के बाद भी शायद ही मिट पाए। लेकिन अगर चारों को खा लेता हूँ तो आगे क्या करूंगा? मुझे अभी कई दिनों यहीं आसपास भटकना है। इसलिए हे कुआं बाबा, अब तुम्हीं बताओ कि मैं क्या करूं! एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं चारों खा जाऊं?' लेकिन कुएं की ओर से कोई जवाब नहीं मिला। वह बोल तो सकता नहीं था, इसलिए कैसे जवाब देता!

उस कुएं के अन्दर चार परियां रहती थीं। उन्होंने जब शेखचिल्ली की बात सुनी तो सोचा कि कोई दानव आया है जो उन्हीं चारों को खाने की बात सोच रहा है। इसलिए तय किया कि चारों को कुएं से बाहर निकालकर उस दानव की विनती करनी चाहिए, ताकि वह उन्हें न खाए। यह सोचकर चारों परियां कुएं से बाहर निकल आई।

-जारी

शेखचिल्ली सबसे पहले अपने गांव के साहूकार के यहाँ गए। सोचा कि शायद साहूकार कोई छोटी – मोटी नौकरी दे दे। लेकिन निराश होना पड़ा। साहूकार के कारिन्दों ने ड्योढ़ी पर से ही डांट – डपटकर भगा दिया।

अब शेखचिल्ली के सामने कोई रास्ता नहीं था। फिर भी एक गांव से दूसरे गांव तक दिन भर भटकते रहे। घर लौट नहीं सकते थे, क्योंकि बीवी ने सख्त हिदायत दे रखी थी कि जब तक नौकरी न मिल जाए, घर में पैर न रखना...

• रोचक...

गोल छतरी

बारिश हो या फिर धूप, छतरी का इस्तेमाल किया जाता रहा है। छतरी हमें बारिश में भीगने से बचा लेती है तो वहीं कड़कड़ाती धूप से भी ये हमारा बचाव करती है। छतरी का इस्तेमाल कई सालों से होता आ रहा है, ऐसे में इसे लेकर भी कई तरह के सवाल हैं जो लोगों के मन में आते हैं। इसी तरह एक सवाल ये भी है कि छतरी गोल ही क्यों होती है? चोकोर क्यों नहीं? चलिए जान लेते हैं। दरअसल ऐसा नहीं है कि गोल की जगह चोकोर छतरी बनाने के बारे में कभी सोचा नहीं गया है, लेकिन गोल की अपेक्षा चोकोर छतरी उतनी सुरक्षा नहीं देती। गोल छतरी पानी को चारों ओर से रोक लेती है, वहीं यदि छतरी चोकोर होती है तो वो पास से गुजर रहे लोगों को परेशान भी करेगी और आपको भीगने से तो बचा लेती हैं, लेकिन सुरक्षा नहीं देतीं।

• फोन का इस्तेमाल...

कई लोग रात में सोने से पहले घंटों तक फोन का इस्तेमाल करते हैं, जो उनके लिए बड़ी परेशानी की वजह बन सकती है। दरअसल फोन का इसका टाइम पास के लिए इस्तेमाल करना हमारी आंखों और मस्तिष्क दोनों को ही खराब करता है। आजकल अधिकतर लोग दिनभर के भाग दौड़ के बाद रात को मोबाइल में ही अपना फेवरेट शो देखते हैं या फिर कोई गेम ही खेलने लग जाते हैं, लेकिन हर रात ऐसा करके सोने से हम बहुत ही गंभीर बीमारियों को न्योता दे रहे हैं क्योंकि अंधेरे कमरे में मोबाइल में लगातार देखकर सोने से आंखों पर बहुत ही बुरा असर पड़ता है।